ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.841156

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

बी.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

राम निवास [1], डॉ. ए. के. नौटियाल [2]
[1] शोधार्थी, शिक्षासंकाय, बिड़ला परिसर, हे0न0ब0ग0 केन्द्रीय विश्वविद्यालय श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड (भारत)
[2] एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, बिड़ला परिसर, हे0न0ब0ग0 केन्द्रीय विश्विद्यालय श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड (भारत)

सार संक्षेपः– राष्ट्रीय विकास के लिए मानवीय संसाधन को उपयोगी बनाने में अध्यापकों की अहम् भूमिका है। कक्षागत् क्रियाकलापों के लिये अध्यापक अनेक शिक्षण युक्ति एवं विधियाँ प्रयोग करता है। वर्तमान में गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध कराने पर अधिक बल दिया जा रहा है। शिक्षण में सृजनात्मक अभिवृत्ति छात्रों की रचनात्मकता को पोषित करती है। जिससे वे उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का समुचित प्रयोग करके संतोषजनक परिणामों को सुनिश्चित किया जा सकता है। यशपाल समिति (1992), ने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में छात्राध्यापकों के स्वतंत्र चिंतन व स्व–अधिगम क्षमता के विकास पर मुख्य जोर दिया। उत्तम स्तर के शिक्षण संस्थानों को स्थापित करने में अध्यापकों की शिक्षण कौशल सक्षमता एक महत्वपूर्ण कारक है। जिससे आकृष्ट होकर छात्र ऐसे संस्थानों में प्रवेश को प्राथमिकता देते है। जिसके पीछे उनमें पढ़ाने वाले शिक्षकों की अध्यापन शैली में रचनात्मक अभिवृत्ति से कार्य करना है। छात्राध्यापकों की पेशेवर सक्षमता को विकसित करने के लिए शिक्षा में आर.टी.ई., अध्यापक पात्रता परीक्षा (टी.ई.टी.) एवं बी.एड. प्रशिक्षण के एक वर्षीय पाठ्यक्रम को दो वर्ष करना आदि अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता हेतु शिक्षण प्रशिक्षण के पर्याप्त अवसरों को स्थान दिया गया है।
प्रस्तुत शोध पत्र में द्विवर्षीय नवीन बी.एड. पाठ्यक्रम के छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति सृजनात्मक मनोवृत्ति एवं शिक्षण सक्षमता का अध्ययन किया गया है। वर्णानात्मक शोध में पन्द्रह प्रशिक्षुता (इंटर्नशिप) विद्यालयों में शिक्षण अभ्यास करने वाले 132 छात्राध्यापकों का चयन साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा कला एवं विज्ञान वर्ग द्वारा किया गया। आँकड़ों का संकलन डॉ. बी.के. पॉसी एवं डॉ. एम.एस. ललिता की मानकीकृत सामान्य शिक्षण सक्षमता मापनी तथा डॉ. आर.पी. शुक्ला के सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति मापनी उपकरणों का प्रयोग ऑकडों के संकलन में किया गया। शोध सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त आंकड़ों का साख्यिकीय विश्लेषण में प्रतिशत, मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी–मान एवं पियर्सन सहसम्बन्ध गुणांक आदि सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया। जिससे प्राप्त निष्कर्ष द्वारा विदित हुआ है कि– 1.) कला एवं विज्ञान छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता में समानता लेकिन सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्यमान स्तर में सार्थक अंतर पाया गया। 2.) कला वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक अभिवृत्ति के मध्य सकारात्मक अनुबन्ध है तथा 3.) विज्ञान वर्ग के छात्राध्यपकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक अभिवृत्ति में धनात्मक सहसम्बन्ध है।

मुख्य शब्द – शिक्षण सक्षमता, सृजनात्मक अभिवृत्ति एवं छात्राध्यापक (भावी अध्यापक)

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.841156

Cite This Article: राम निवास, डॉ. ए. के. नौटियाल. (2017). "बी.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 5(7), 587-597. https://doi.org/10.5281/zenodo.841156.

प्रस्तावना :– राष्ट्रीय विकास को तीव्र बनाने में शिक्षा एक सशक्त माध्यम है। जिसके लिये अध्यापक रूपी मानवीय संसाधन का कार्य कुशल होना अत्यंत आवश्यक है। इसके अभाव में शिक्षण–अधिगम को सफल व उचित दिशा प्रदान नहीं की जा सकती है। शिक्षण एक कला है, अध्यापक को इसमें दक्षता प्राप्ति के लिए अपने कक्षागत् कार्य निष्पादन में सक्षम एवं निपुण होना जरूरी है। ताकि वह अपनी व्यवसायिक उन्नत्ति के लिये शिक्षा के नीतिगत आधारों एवं सिद्धांतों के साथ–साथ पढ़ाने की विधियों एवं युक्तियों का प्रयोग कर सके। विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ 'अध्यापक व्यवहार' द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है। आधुनिक शिक्षा में अध्यापक के समक्ष एक बड़ी चुनौती है, कि वर्तमान में तेजी से बदलते परिवेश के अनुरूप शिक्षण–अधिगम प्रदान करना। ताकि उनके नवाचारिक प्रयासों से कक्ष–शिक्षण में रोचकता बनी रहे। अध्यापक और विद्यार्थी दोनों ही कुछ नया करने के लिये उत्सुक रहते हैं। ऐसे में छात्राध्यापकों को अपने प्रशिक्षण के दौरान सुनियोजित अवलोकन करके शिक्षण कौशलों के समुचित अभ्यास द्वारा बालकों के प्रति अधिगम मनोवृत्तियों, योग्यताओं, रूचियों तथा कुशलता विकास के अवसर प्राप्त होते है। जिससे वे सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने में सक्षम हो सकेगें।

छात्राध्यापकों के स्व–अधिगम व स्वतंत्र चिंतन की क्षमता का विकास करने के लिए यशपाल समिति (1992), ने शिक्षा की बदलती जरूरतों के अनुसार शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रासंगिक एवं व्यावहारिक बनाने पर मुख्य जोर दिया। समस्त शिक्षण व्यवस्था की प्रगति अध्यापकों की प्रशिक्षण गुणवत्ता पर निर्भर करती है। कक्ष–शिक्षण कृत्य, अध्यापक व विद्यार्थी के मध्य परस्पर होने वाली सम्प्रेषणात्मक अतंक्रिया का प्रतिफल है। भावी अध्यापकों की शिक्षण सक्षमता के उन्नयन के लिए उनको अवलोकन आधारित अध्ययन के प्रत्येक घटक के प्रति जागरूक करना है। क्योंकि विद्यालयी गतिविधियों का संचालन, उनमें मौजूद शिक्षकों की शिक्षण सक्षमता पर निर्भर है। उनके कक्षागत् व्यवहार का अनुकरण विद्यार्थियों की निष्पत्तियों के रूप में झलकता है। इस प्रकार गाँधीजी की बुनियादी तालीम की संकल्पना के क्रियान्वयन से देश के नवयुवक शिक्षा के साथ–साथ हाथों में कार्य दक्षता एवं मनोंवृत्ति में रचनात्मकता लिए होगे। वे आत्मनिर्भर, कर्त्तव्यनिष्ठ तथा आत्मसम्मान के साथ राष्ट्रीय विकास में योगदान दे पाएगे। अध्यापक प्रशिक्षण की वर्तमान दयनीय एवं दुर्बल स्थिति से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से परिचित हैं। जिसे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित जस्टिस वर्मा अयोग (2012), ने अपनी रिपोर्ट में वैधानिक रूप से प्रमाणित किया कि अध्यापक प्रशिक्षण में ज्ञान के कुछेक अशों का इस्तेमाल पारस्परिक रूप से किया जाता है। जिसका कक्षागत् व व्यवहारिक परिस्थितियों से भी कोई सम्बंध नहीं हो पाता है। वर्तमान चुनौतीपूर्ण अस्थिरता के दौर में कुछ अध्यापक तल्लीनता एवं शालीनता के साथ अपने उत्तरदायित्वों को लग्न व कर्मठता से निर्वहन कर रहे हैं। ऐसे अध्यापक समाज में बच्चों को दिशा देने में अपनी सृजनात्मक मनोवृत्ति के साथ योगदान दे रहे हैं। भावी अध्यापकों के प्रशिक्षण में सुधार कर उसे सुचारू बनाने के लिये एन.सी.एफ.टी.ई. रेगुलेशन (2009) एवं (2014) के अलावा आर.टी.ई. एक्ट (2009) में भी शिक्षण सक्षमता की जरूरतों पर बल दिया गया है। वर्तमान अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के पुर्नगठन से नवीन प्रशिक्षण कार्यक्रम में छात्राध्यापकों को विद्यालयी अनुभवों के दर्शन तथा बालकों की संवेगात्मक जरूरतों का पाठ्यचर्या के घटकों पर पड़ने वाले प्रभाव को समझते हुए, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की परिस्थितियों का अवलोकन करना है। ताकि वे पाठ–योजना नियोजन, शिक्षण तथा मुल्यांकन कर छात्रों व समुदाय के सदस्यों के बीच सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम हो पाए।

शिक्षण सक्षमता :– सफल अध्यापक की योग्यता एवं शिक्षण कुशलता को शिक्षण कौशल सक्षमताओं के रूप में शामिल किया है। जो छात्रों की उत्तम उपलब्धियों को सुनिश्चित करती है। उनके सर्वांगीण विकास में

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.841156

पाठ्यवस्तु ज्ञान, प्रस्तुति, कौशल एवं कक्ष–व्यवस्था आदि शिक्षण की अन्य व्यक्तिगत विशेषताए, जिसको शिक्षक अपेक्षित शिक्षण की योग्यता के रूप में स्वीकार करते है।

रमा (1979), के अनुसार 'अध्यापक की वह योग्यता जिससे वह कक्षागत् व्यवहार के सेट के रूप में प्रकट होता है। जो पूर्व निर्धारित सामाजिक व्यवस्था के अंर्तगत शिक्षण के उत्पाद चरों के मध्य संवाद को परिणाम प्रदान करता है।' अर्थात् शिक्षण सक्षमता अध्यापक के अवलोकित सभी अपेक्षित शिक्षण व्यवहारों द्वारा विद्यार्थियों की वांच्छनीय उपलब्धियों के परिणामों को सुनिश्चित करने के लिए एक प्रभावी प्रदर्शन को दर्शाती है।

सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति :– अध्यापनकर्ता की वह मनोदशा जिसे वह शिक्षण–अधिगम की स्थितियों में रचनात्मक दृष्टिकोण द्वारा व्यक्त करता है। जो उसकी जिज्ञाशा, मौलिकता, विचार प्रवाह, कल्पनाशीलता तथा समस्या के प्रति संवेदनशीलता आदि विशिष्ट स्वभाविक गुणों के रूप में प्रकट होती है। जिनको वह अन्य व्यक्तियों में खोजने एवं पोषित करने में खुशी व्यक्त करता है। ऐसे अध्यापक शिक्षण कार्य में निपुण एवं तथ्यों की वास्तविक रूप से गहन अन्वेषण करने की इच्छा रखते है। पेशेवर क्षमता विकास के लिये कभी–कभी शिक्षक स्व–मुल्यांकन द्वारा अपनी कमियों का विश्लेषण करता है, तथा उनसे छुटकारा पाने के लिए अपनी मनोवृत्ति एवं धारणा में सुधार लाने की प्रयास करता है।

सिम्पसन (1922), ने परिभाषित किया कि सृजनात्मक अभिवृत्ति जन्मजात रूप से प्रकट ऐसी शक्ति है, जो व्यक्ति को सामान्य अनुक्रम से हटकर उसके असामान्य क्रम को तोड़ने की क्षमता है। जिससे वह दूसरों से अलग अनौखा नजरिया प्रस्तुत करता है।

अध्ययन का महत्व :–

अध्यापक की अभिवृत्ति में सृजनात्मक शिक्षण की धारणा कक्षा में विद्यार्थियों के पाठ्यवस्तु को सीखने व समझने के प्रति सजग व संवेदनशील बनाती है। जिससे वे बुद्धिमत्तापूर्वक अपने प्रयासों एवं चिन्तन को स्वोपक्रमों में अपनाते है तथा दैनिक जीवन में सार्थक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। 21वीं शताब्दी में जनतंत्र की बढ़ती बौद्धिक जरूरतों को पूरा करने के लिये बड़ी संख्या में स्कूलों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों को स्थापित किया गया है। निरन्तर बढ़ते उत्तरदायित्वों एवं सामाजिक अपेक्षाओं के बीच अध्यापक अपनी भूमिका का निर्वहन तभी कर सकते हैं। जब उसके प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षण सक्षमता बढ़ाने के पर्याप्त अवसर दिये जायेगे तो वह अध्यापन सामग्री को सहज एवं रोचक जानकारी द्वारा विद्यार्थियों की विश्लेषण क्षमता का भी विकास हो सकेगा। वैश्वीकरण की चकाचौंध के अव्यवहारिक चिन्तन में उलझें युवाओं के दृष्टिकोण को सही दिशा देने के लिये, अध्यापक और समाज दोनों के दृष्टिकोण में उचित सामंजस्य एवं बदलाव की आवश्यकता है। यह अध्ययन नवोदित अध्यापकों की शिक्षण सक्षमताओं एवं रचनात्मक शिक्षण अभिवृत्तियों के मध्य क्या सम्बन्ध है? तथा उनके द्वारा पढ़ाये जाने वाले छात्रों एवं उत्तरवर्ती पीढ़ियों पर पडनें वाले प्रभाव से क्या सम्बंध है? यह विद्यालयों में शिक्षण कार्य के लिये अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवा पूर्व प्रशिक्षण द्वारा प्रशिक्षित हो रहे, भावी अध्यापक में पाठ्यचर्या के अनुरूप मानवीय संसाधनों की मदद से शिक्षण सक्षमताओं के साथ अपने छात्रों में रचनात्मक कल्पना शक्तियों के विकास के प्रति किस सीमा तक जागरूक करने में भी सक्षम होंगे।

सम्बन्धित शोध साहित्यों का सर्वेक्षण :–

1.) विदेशी साहित्य सर्वेक्षण –

गेटजल्स व जैक्सेन (1958), के अध्ययन में सृजनात्मकता एवं बुद्धि के मध्य एक दूसरे में समानार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया। **अविला (1979),** ने माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धियों पर चयनित टीचिंग कम्पीटेसीयों के प्रभाव का अध्ययन किया कि शिक्षक के विशिष्ट शिक्षण सक्षमताओं में समुचित रूप से

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.841156

प्रशिक्षित होने पर छात्रों की अधिगम निष्पत्तियों की सम्भावना में अपेक्षित रूप से सार्थक वृद्धि पायी गयी। **कॉर्नेलियस (2000),** ने माध्यमिक स्तर पर छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता को प्रभवित करने वाले कारकों का निरूपण किया कि उनके विभिन्न विषयों के समूहों पर बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि और शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति पर विभेदीय कारकों के प्रभाव को पाया। **ऑडेल्व (2009),** द्वारा अध्ययन में पुरूष एवं महिला छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया। जिससे स्पष्ट है कि छात्राध्यापकों के लैंगिक सजातीय गुणों पर अभिवृत्ति का कोई प्रभाव नही पडता है।

2.) भारतीय साहित्य सर्वेक्षण –

माथूर (1988), ने शिक्षकों की सृजनात्मकता एवं अभिवृत्ति के अध्ययन में पाया कि शिक्षक सीखने की विभिन्न अवस्थाओं में अनुकूल अभिवृत्ति एवं सृजनात्मक शिक्षण में प्रतिकूल अभिवृत्ति प्रदर्शित करते पाये गये तथा आयु, लिंग, शिक्षण अनुभव एवं वर्ग विषय में सृजनात्मक शिक्षण–अधिगम की विभिन्न स्थितियों का कोई प्रभाव नहीं पाया। **गोवदा, कृष्णा (1991),** ने बी.एड. छात्राध्यापकों की सृजनात्मकता को उनके जोखिम उठाने की प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन में पाया कि उच्च, मध्य एवं कम जोखिम उठाने वाले छात्राध्यापक समूहों के सुजनात्मक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया है तथा अंतर्मुखी, बहिर्मुखी व्यक्तिगत के छात्राध्यापक समूहों की सृजनात्मक के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया गया। **जैन (1992),** ने नागपुर वि.वि. के बी.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण अभियोग्यता कौशल एवं सृजनात्मकता के मध्य उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। **देशाई व देशपॉण्डे (1996),** द्वारा बी.एड. छात्राध्यापकों के विक्षिप्त व्यक्तित्व एवं शिक्षण सक्षमता के प्रभाव का अध्ययन किया। जिसके निष्कर्ष में पाया कि अधिक एवं कम विक्षिप्त छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं था तथा मौखिक प्रतिपुष्टियाँ प्राप्त करने वाले छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया। **सिंह व सिंह (2003),** ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षक सक्षमताओं में शामिल पाठ प्रस्तावना, प्रस्तुति, प्रदर्शन, प्रश्नोत्तर, व्याख्यान, प्रवीणता तथा पुर्नबलन आदि कौशलों के अलावा कक्ष–प्रबंधन, बाल मनोविज्ञान की समझ के सार्थक प्रभाव को अध्ययन में पाया। **कुमार (2007),** द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण की अवधि विस्तार को एक से दो महीनों के अभ्यास–शिक्षण में छात्राध्यापकों के शिक्षण स्तर को उत्तम स्थिति में पाया। **शुक्ला, एस. (2014),** ने अपने शोध लेख में लखनऊ शहर के पाँच सरकारी एवं पाँच निजी प्राथमिक स्कूलों में 100 शिक्षकों की शिक्षण सक्षमता का प्रतिबद्धता एवं कार्य संतुष्टि दोनों के मध्य अत्यंत कम व धनात्मक सहसम्बन्ध पाया। शिक्षण सक्षमता का कार्य संतुष्टि के उच्च व सामान्य स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही पाया। **खान, एस.ए. (2015),** के शोध लेख में औरंगाबाद शहर के 120 बी.एड. छात्रों की सामान्य शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य अत्यंत कम व धनात्मक सहसम्बन्ध पाया। पुरूषों एवं महिला छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता व सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति में उच्च धनात्मक सम्बन्ध पाया तथा पुरूषों एवं महिला छात्राध्यापकों की सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति एवं शिक्षण सक्षमता के बीच के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अर्थात् दोनों समूहों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति की स्थिति समान पाई गयी। **कौर, एस. (2015),** ने शोध लेख में अम्बाला शहर के 160 बी.एड. छात्राध्यापकों स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। अध्ययन के उद्देश्यों की सृजनात्मक शिक्षण का स्थानीयता एवं विषय वर्ग दोनों में सार्थक अन्तर पाया। जबकि छात्राध्यापकों के लिंग के अन्तर्गत सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। क्योंकि शहरी एवं विज्ञान छात्राध्यापकों को ग्रामीण एवं कला छात्राध्यापकों शिक्षण पाठयचर्या में अपेक्षाकृत अधिक रचनात्मक गतिविधियों अवसर उपलब्ध होना स्वीकार किया है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. बी.एड. छात्राध्यापकों में शिक्षण सक्षमता की अंतर्वैयक्तिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. बी.एड. छात्राध्यापकों में सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति अतर्वैयक्तिक स्थिति का अध्ययन करना।
3. कला एवं विज्ञान छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता का अध्ययन करना।
4. कला एवं विज्ञान छात्राध्यापकों की सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.841156

5. कला वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
6. विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–
1. कला एवं विज्ञान छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. कला एवं विज्ञान छात्राध्यापकों की सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. कला वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होता है।
4. विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होता है।

अनुसंधान विधि :–
प्रस्तुत अध्ययन में वर्णानात्मक सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है। उद्देश्यों की परिकल्पनाओं के परीक्षण करने के लिये तथा चरों को व्यवस्थित रूप से अर्थपूर्ण निष्कर्ष प्राप्ति हेतु प्राचल (पेरामैट्रिक) सांख्यिकी का प्रयोग किया गया। सर्वेक्षण से प्राप्त संख्यात्मक मूल प्रदत्तों का व्यवस्थापन, प्रस्तुतिकरण एवं परिचालन शैक्षिक वर्ग के आधार पर किया गया।

जनसंख्या तथा न्यादर्श :–
गढ़वाल विश्वविद्यालय के बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् छात्राध्यापक अध्ययन की जनसंख्या हैं। अध्ययन हेतु देहरादून जनपद के रायपुर ब्लॉक में पन्द्रह प्रशिक्षुता (इंटर्नशिप) विद्यालयों में शिक्षण अभ्यास करने वाले छात्राध्यापकों का चयन साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। न्यादर्श के रूप में 65 कला एवं 67 विज्ञान के कुल 132 छात्राध्यापकों का चयन किया गया।

प्रयुक्त उपकरण प्रशासन :–
आँकड़ों का संकलन दो मानकीकृत प्रश्नावलियों डॉ. पॉसी, बी.के. एवं ललिता, एम.एस. (1994) द्वारा निर्मित सामान्य शिक्षण सक्षमता मापनी (GTCS) से किया। जिसमें छात्राध्यापक की पाँच प्रमुख कौशल पर आधारित कम्पीटेसीयों के 21 पदों को तथा डॉ. शुक्ला, आर.पी. (2012) द्वारा निर्मित सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति मापनी (ACTS) में छात्रों व कक्षागत् परिस्थितियों की सात नकारात्मक एवं तेईस सकारात्मक अभिवृत्तियों से सम्बन्धित कुल 30 बिन्दु शामिल है। उपकरणों का प्रशासन बी.एड. सत्र (2015–17) के तृतीय सेमंस्टर के शिक्षण अभ्यास के दौरान विद्यालयी प्रशिक्षुता अवधि में किया गया। शिक्षण अभ्यास आवलोकनकर्ता द्वारा (GTCS) को सात बिन्दु मापनी परीक्षण के उपरांत उक्त छात्राध्यापक से (ACTS) प्रश्नावली भरवायी गयी।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ :– परीक्षण से प्राप्त मूल आँकडों का फलांकन मैनुअल फलांक सूची द्वारा किया तथा समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण कर परिकल्पनाओं की पुष्टि के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में उद्देश्यों की प्रकृति के अनुरुप मध्यमान, मानक विचलन, टी–स्कोर तथा पियर्सन सहसंबन्ध गुणांक आदि सांख्यिकी का प्रयोग किया गया हैं।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या :–

उद्देश्य (1) :– बी.एड. छात्राध्यापकों में शिक्षण सक्षमता की अंतर्वैयक्तिक स्थिति का अध्ययन करना।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.841156

सारणी सं0 1– छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता का अंतर्वैयक्तिक स्थिति विवरण:

छात्राध्यापक सं0 (प्रतिशत में)	17.43	20.45	46.97	10.61	04.54
आवृत्ति (f)	23	27	62	14	06
सामान्य शिक्षण सक्षमता (GTCS–स्कोर)	उच्च (115–ऊपर)	औसत से अधिक (103–114)	औसत (88–102)	औसत से कम (78–87)	न्यूनतम (77–कम)

*N = 132 (नोट– सामान्य शिक्षण सक्षमता स्कोर प्रश्नावली मैनुवलानुसार M = 95.50, SD = 14.60, N = 1015)

परिणाम विश्लेषण :– सारणी सं0–1 के अवलोकन से स्पष्ट है, कि अभ्यास–शिक्षण के दौरान 46.97 प्रतिशत, 62 बी.एड. छात्राध्यापक शिक्षण सक्षमता में (88 से 102) औसत स्तर के पाए गये। साथ ही 20.45 प्रतिशत, 27 छात्राध्यापक औसत से अधिक (103 से 114) स्तर के पाये गए एवं 17.43 प्रतिशत, 23 छात्राध्यापक उच्च शिक्षण सक्षमता वाले पाए गये तथा 10.61 प्रतिशत 14 छात्राध्यापक औसत से कम (78 से 87) स्तर के एवं 04.54 प्रतिशत 06 छात्राध्यापक शिक्षण सक्षमता में (77 से कम) निम्नतर स्तर के पाए गये। बी.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता के प्राप्तांकों की अंतर्वैयक्तिक स्थिति में सार्थक अन्तर पाया गया। अर्थात् छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता का स्तर अध्यापन कौशल निपुणता पर निर्भर करता है।

उद्देश्य (2) :– बी.एड. छात्राध्यापकों में सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति अंतर्वैयक्तिक स्थिति का अध्ययन करना।

सारणी सं0 2– छात्राध्यापकों की सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का अंतर्वैयक्तिक स्थिति विवरण:

छात्राध्यापक सं0 (प्रतिशत में) *N	07.58	54.54	34.85	03.03
आवृत्ति (f)	10	72	46	04
सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति (ACTS–स्कोरं)	अत्यधिक सकारात्मक (120–ऊपर)	उच्च सकारात्मक (108–119)	सामान्य सकारात्मक (92–107)	नकारात्मक (91–नीचे)

*N = 132 (नोट– सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति स्कोर प्रश्नावली मैनुवलानुसार M = 99.50, SD = 15.70, N = 450)

परिणाम विश्लेषण :– सारणी सं0–2 के अवलोकन द्वारा निष्कर्ष प्राप्त हुए है, कि सर्वाधिक 54.54 प्रतिशत, 72 बी.एड. छात्राध्यापकों की सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर (108 से 119) उच्च सकारात्मक पाया गया तथा 34.85 प्रतिशत, 46 छात्राध्यापक सामान्य सकारात्मक अभिवृत्ति (92 से 107) वाले पाए गये। अध्ययन में 07.58 प्रतिशत, 10 छात्राध्यापक की सृजनात्मक शिक्षण में अत्यधिक सकारात्मक अभिवृत्ति (120 से ऊपर) पायी गई। जबकि 03.03 प्रतिशत 04 छात्राध्यापक नकारात्मक मनोवृत्ति में (91 से निम्न) स्तर के पाए गये। बी.एड. छात्राध्यापकों की सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के प्राप्तांकों की अंतर्वैयक्तिक स्थिति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः छात्राध्यापकों में सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर उनकी बौद्धिक सक्रियता के कारण होता है।

उद्देश्य (3) :– कला एवं विज्ञान छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता का अध्ययन करना।

परिकल्पना (H_{01}) :– कला एवं विज्ञान छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.841156

सारणी सं0 3 :– छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता का विषय वर्गानुसार सांख्यिकीय विवरण:

समूह	छात्राध्यापक सं0 (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	प्रमाणिक त्रुटि (SEd)	प्राप्त टी–मान	तालिका t-मान	द्वि–पक्षीय सार्थकता	सार्थकता स्तर
कला	65	8.62	14.74	2.60	1.59	1.96	.112	(df=130)p>0.05 पर असार्थक है
विज्ञान	67	102.78	15.14					

स्वतन्त्रता अंश (df) =130 की .05 स्तर पर सार्थकता'

परिणाम विश्लेषण :– सारणी सं0–3 में आँकडों के सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है, कि कला छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता का मध्यमान 98.62 एवं प्रमाणिक विचलन 14.74 है तथा विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता का मध्यमान 102.78 एवं मानक विचलन 15.14 है। सांख्यिकीय दृष्टि से दोनों समूहों की प्रमाणिक त्रुटि (SEd) 2.60 एवं द्वि–पक्षीय सार्थकता .112 है तथा प्राप्त टी–मान 1.59 स्वतंत्रता अंश (df) 130 के लिए .05 सार्थकता स्तर पर जाँच तालिका ज.मान 1.97 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना (Ho_1) .05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है। अतः दोनों समूहों के मध्यमानों में वास्तविक अन्तर नही है, कला एवं विज्ञान छात्राध्यापकों में समान्य शिक्षण सक्षमतायें समान रूप से विद्यमान है।

उद्देश्य (4) :– कला एवं विज्ञान छात्राध्यापकों की सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पना (Ho_2) :– कला एवं विज्ञान छात्राध्यापकों की सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी सं04 :– छात्राध्यापकों की सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का विषय वर्गानुसार सांख्यिकीय विवरण:

समूह	छात्राध्यापक सं0 (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	प्रमाणिक त्रुटि (SEd)	प्राप्त टी–मान	तालिका t-मान	द्वि–पक्षीय सार्थकता	सार्थकता स्तर
कला	65	07.75	7.83	1.24	2.35	1.96	.026	(df=130)p<0.05 पर सार्थक है
विज्ञान	67	10.67	6.99					

स्वतन्त्रता अंश (df)=130 की .05 स्तर पर सार्थकता

परिणाम विश्लेषण :– सारणी सं0–4 द्वारा आँकडों के विश्लेषणात्मक अवलोकन से ज्ञात हुआ कि कला वर्ग के छात्राध्यापकों की सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 107.75 एवं मानक विचलन 7.83 तथा विज्ञान छात्राध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 110.67 एवं प्रमाणिक विचलन 6.99 है। सांख्यिकीय दृष्टि से दोनों समूहों की प्रमाणिक त्रुटि (SEd) 1.24 एवं द्वि–पक्षीय सार्थकता .026 है तथा प्राप्त टी–मान 2.35, स्वतंत्रता अंश (df) 130 के लिए .05 सार्थकता स्तर पर जाँच तालिका ज.मान 1.97 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना (H_{02}) 0.05 स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् विज्ञान छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति का मध्यमान कला वर्ग की अपेक्षा अधिक है अतः वे शिक्षण कार्य में अपेक्षाकृत अधिक सृजनात्मक अभिवृत्ति का प्रयोग करते हैं।

उद्देश्य (5) :– कला वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.841156

परिकल्पना (*$H0_3$*) :– कला वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होता है।

सारणी सं05 :– छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विवरणः

चर	छात्राध्यापक सं0 (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	r-गुणांक त्रुटि (SEr)	सहसम्बंध गुणांक पियर्सन (r)	द्वि–पक्षीय सार्थकता	सार्थकता स्तर
सामान्य शिक्षण सक्षमता (GTCS)	65	8.62	14.74	0.122	.094	.456	(df=63)p>0.05 पर असार्थक है
सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति (ASTS)	65	07.75	07.83				

परिणाम विश्लेषण :– सारणी सं0–5 के विश्लेषणात्मक अवलोकन से स्पष्ट है, कि कला वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता का मध्यमान 98.62 एवं मानक विचलन 14.74 पाया गया तथा इनकी सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 107.75, प्रमाणिक विचलन 07.83 है। सांख्यिकीय दृष्टि से दोनों चरों की अनुबन्ध गुणांक प्रमाणिक त्रुटि (SEr) 0.122 एवं द्वि–पक्षीय सार्थकता .456 है। कला वर्ग के छात्राध्यापकों की सामान्य शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य पियर्सन सहसम्बंध गुणांक (r) .094 पाया गया। जोकि स्वतंत्रता अंश (df) 63 की .05 सार्थकता स्तर पर पियर्सन r-गुणाँक जाँच तालिका मान .15 से कम है। इस प्रकार कला छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक अभिवृत्ति के मध्य धनात्मक रूप से अति निम्न सहसंबन्ध है। अतः अध्ययन की शून्य परिकल्पना (*Ho_3*) स्वीकृत की जाती है। कला छात्राध्यापक भाषा एवं साहित्यिक विषयों के शिक्षण में पराम्परागत कलात्मक पक्षों का शैक्षिक चर्चा के लिए इस्तेमाल करते है। अतः उनकी शिक्षण कौशल सक्षमता स्तर को नवाचारिक प्रयासों द्वारा सृजनात्मक अभिवृत्ति के यथौचित अन्तः क्रिया के माध्यम से बढाया जा सके, जिससे शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के चरों के मध्य उचित सम्बन्ध स्थापित हो पाये।

उद्देश्य (6) :– विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पना ($H0_4$) :– विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होता है।

सारणी सं06 :– विज्ञान छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विवरणः

चर	छात्राध्यापक सं0 (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	r-गुणांक त्रुटि (SEr)	सहसम्बन्ध गुणांक पियर्सन (r)	द्वि–पक्षीय सार्थकता	सार्थकता स्तर
सामान्य शिक्षण सक्षमता (GTCS)	67	02.16	15.14	0.0618	.244	.047	(df=65)p<0.05 पर सार्थक
सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति (ASTS)	67	10.67	06.99				

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.841156

परिणाम विश्लेषण :– सारणी सं0–6 द्वारा आँकडों के विश्लेषणात्मक अवलोकन से ज्ञात है, कि विज्ञान छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता का मध्यमान 102.16 एवं मानक विचलन 15.14 तथा इनमें शिक्षण के प्रति सृजनात्मक अभिवृत्ति का मध्यमान 110.67, प्रमाणिक विचलन 6.99 और अनुबन्ध गुणांक त्रुटि (SEr) 0.0618 एवं द्वि–पक्षीय सार्थकता .047 है। विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं शिक्षण के प्रति सृजनात्मक अभिवृत्ति के मध्य पियर्सन सहसम्बंध गुणाँक (r) .244 पाया गया। जोकि .05 स्तर पर सार्थकता जाँच तालिका में पियर्सन r-मान .15 से अधिक है। इस प्रकार स्पष्ट है कि विज्ञान छात्राध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं सक्षमता में सार्थक रूप से निम्न धनात्मक सहसम्बंध है। अतः अध्ययन की शून्य परिकल्पना (Ho_4) अस्वीकृत की जाती है। अतः विज्ञान वर्ग के छात्राध्यपकों की सृजनात्मक अभिवृत्तियों द्वारा उनकी शिक्षण सक्षमता में धनात्मक वृद्धि होती है।

निष्कर्ष विवेचना :– अध्ययन के परिणामों द्वारा निम्नलिखित निष्कर्ष साक्ष्य रूप में प्राप्त हुए है–

1. बी.एड. छात्राध्यापकों की सामान्य शिक्षण सक्षमता की अंतर्वैयक्तिक स्थिति में अपेक्षित अन्तर पाया गया। जिनमें अधिकांश छात्राध्यापक शिक्षण कौशलों सक्षमता स्तर से औसत से अधिक स्तर के पाए गये।
2. अधिकांश बी.एड. छात्राध्यापकों में सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति की अंतर्वैयक्तिक स्थिति सकारात्मक मनोवृत्ति पाई गयी। छात्राध्यापकों द्वारा अध्यापन कुशलता के लिए रचनात्मक क्रियाकलापों का उपयोग करते है।
3. कला एवं विज्ञान छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता सम्बंधी अदिशित उपकल्पना की स्वीकृति, सारणी सं03 द्वारा स्पष्ट है कि स्वतंत्रता अंश 130 पर साँख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थकता स्थिति $t=1.59;(p>0.05)$ में सार्थक अन्तर नही है। इस प्रकार कह सकते है, कि कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रभावशाली अध्यापन कौशल के लिए उपयुक्त कक्षागत् क्रियाकलापों का उपयोग करते है।
4. कला एवं विज्ञान छात्राध्यापकों की सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति सम्बंधी अदिशित उपकल्पना की अस्वीकृति सारणी सं04 द्वारा स्पष्ट है कि स्वतंत्रता अंश 130 पर साँख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थकता स्थिति $t=2.26;(p<0.05)$ में सार्थक अन्तर है। इस प्रकार (कौर, एस. 2015) स्पष्ट होता है कि विज्ञान छात्राध्यापक द्वारा कला छात्राध्यापक की अपेक्षा अभ्यास शिक्षण में सामग्री के प्रस्तुतिकरण के प्रति रचनात्मक मनोवृत्ति का इस्तेमाल किया जाता है।
5. कला वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक अभिवृत्ति के मध्य सह–अनुबन्ध सम्बन्धी अदिशित उपकल्पना की स्वीकृति सारणी सं05 में धनात्मक सहसम्बंध दर्शाती है कि दोनों चरों की द्वि–पक्षीय सार्थकता .456 जो साँख्यिकीय दृष्टि से स्वतंत्रता अंश 63 पर सार्थकता सीमा $r+.094,(p>0.05)$ में सार्थक अंतर नहीं है। इसलिए कहा जा सकता है, कि कला छात्राध्यापक द्वारा साहित्यिक विषयों एवं भाषा शिक्षण में पराम्परागत कलात्मक पक्षों का शैक्षिक चर्चा के लिए सुनिश्चत करना है। जिससे शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के चरों के मध्य उचित सम्बन्ध स्थापित हो सकता है।
6. विज्ञान वर्ग के छात्राध्यपकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक अभिवृत्ति के मध्य सह–अनुबन्ध सम्बन्धी अदिशित उपकल्पना की अस्वीकृति सारणी सं06 में धनात्मक सहसम्बंध दर्शाती है कि दोनों चरों की द्वि–पक्षीय सार्थकता .047 जो साँख्यिकीय दृष्टि से स्वतंत्रता अंश 65 पर सार्थकता सीमा $r+.244,(p<0.05)$ में सार्थक अन्तर है। (खान, 2015) जिसका कारण विज्ञान छात्राध्यापकों का रचनात्मक मनोवृत्ति द्वारा कक्ष–शिक्षण के साथ–साथ प्रयोगिक कार्यो जैसे– हरबेरियम, एक्वेरियम बनाना तथा अन्य वैज्ञानिक मॉडलों को सुनियोजित कर शिक्षण सहायक सामग्री के रुप में प्रयोग करना है। जिससे वे विषयवस्तु के अवयवों के सम्पर्क में आते हैं।

शैक्षिक निहितार्थ :– प्रस्तुत अध्ययन द्वारा भावी अध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक अभिवृत्ति के अनुक्षेत्रों के बोध से उनमें निर्दिष्ट चरों के प्रति रचनात्मक व आत्मविश्लेषी अभिवृत्ति का अनुप्रयोग हो

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.841156

सकेगा। जिसका अप्रत्याशित लाभ शिक्षाविदों एवं प्रशिक्षकों के अधिगमनकर्ताओं की शैक्षिक उपलब्धियों के उन्नयन में भी सहायक होगा, साथ ही शिक्षा व प्रशिक्षण की गुणवत्ता सुधार को भी सम्भव कर सकेगा। शिक्षण के प्रति सृजनात्मक अभिवृत्ति पाठ्यवस्तु के संप्रत्यय को सिद्धांत की अपेक्षा अधिक व्यवहारिक बनाती है। प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा ऐसी बनायी जाए, जिससे शिक्षण कौशलों को सकारात्मक बोध द्वारा उचित पैडागॉजिकल संबंध को सुनिश्चित किया जा सकेगा। शिक्षण के प्रति सृजनात्मक अभिवृत्ति एवं कम्पीटेंसी के मध्य धनात्मक सहसंबन्ध से स्पष्ट है कि इनसे अध्यापक प्रशिक्षण में चयनित छात्राध्यापकों की पेशेवर प्रत्याशा व पैडगॉजिकल बोधगम्यता विकासित हो सकेंगी।

प्रस्तुत अध्ययन भावी अध्यापकों की रचनात्मक अभिवृत्ति को उनके विषय ज्ञान की विचारशीलता, तार्किक चिन्तन द्वारा प्रशिक्षण के विभिन्न घटकों जैसे सूक्ष्म शिक्षण, अनुकरणीय शिक्षण, पाठ नियोजन तथा कक्ष–प्रबन्ध आदि अवसरों के व्यवहारिक अनुभव प्रदान करेगा। प्रशिक्षकों एवं नीति निर्माताओं द्वारा शिक्षण कौशल विकास के विभिन्न मॉडयूलों की भूमिका से प्रशिक्षण के विभिन्न स्तरों पर अभिविन्यास कार्यक्रम को सुस्पष्ट ढंग से लागू किया जा सकेगा। सेवापूर्व प्रशिक्षण में प्रशिक्षुता (इंटर्नशिप) के अंतर्गत समुचित आंकलन व फीडबैक प्रदान कर छात्राध्यापकों की शिक्षण योग्यताओं, दक्षताओं तथा कौशलों में सुधार किया जा सकेगा। बेहतर शिक्षण की आवश्यकताओं तथा व्यावसायिक वृद्धि के लिए उच्च प्रशिक्षण विधियों जैसे कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, समसमायिक संवाद तथा पाठ्य सहगामी गतिविधियों/क्रियाकलापों सशक्त फॉलोअप किया जा सकेगा। प्रशिक्षण में उक्त अध्ययन आवश्यकता को आधार बनाने पर छात्राध्यापक कक्ष–शिक्षण की वास्तविक समस्याओं का सामना कर उचित समाधान प्रस्तुत करने में सक्षम हो सकेंगे। भावी अध्यापक सृजनात्मक अभिवृत्ति के गुणों एवं क्षमताओं की पहचान करके अपनी स्व धारण के निर्मित होने से पूर्व प्रशिक्षण की प्रारम्भिक स्थिति में ही उन्हें उचित दिशा देकर यथोचित शिक्षण सक्षमता को सुनिश्चित किया जा सकता है।

संदर्भ स्त्रोत सूची :–

1. अस्थाना, बिपिन एवं श्रीवास्तव, विजया (2009), *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी,* आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन
2. भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर, ए.बी. (1995), *शिक्षा अनुसंधान,* मेरठः ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, पृ. 425–429.
3. बेस्ट जॉन, डब्ल्यू. (1982), *रिसर्च इन एजूकेशन,* नई दिल्लीः प्रेन्टाइस हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लि.
4. बुच, एम.बी. (1988–92), *फिक्स सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन,* नई दिल्लीः वॉल्यू. (2), एन.सी.ई.आर.टी., पृ. 170–443.
5. चित्रलेखा व कुमार मनोज (2015), *कौशल विकास –आज की लम्बित माँग,* नई दिल्लीः भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी., जुलाई 2015, पृ. 89–100
6. डेविड, ए. (2005), *टीचिंग इंगलिश फॉर क्रिएटिव एक्टीविटी,* नई दिल्लीः कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, पृ. 167–25.
7. गैरिट, एच.ई. (2007), *शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी,* लुधियानाः कल्याणी पब्लिशर्स, पृ. 141–167.
8. गिलफोर्ड, जे.पी. (1950), *क्रिएटिविटी, अमेरिकन साईकॉल्जीस्ट,* वॉल्यू. (5), पृ. 444–54
9. खान, एस.ए. (2015), टू स्टडीज दा रिलेशनशिप बिटविन टीचिंग कॅम्पीटेन्सी एण्ड एटीट्यूड टुवर्डस क्रिऐटिव टीचिंग ऑफ बी.एड. ट्रेनीज इन औरंगाबाद सिटी, एम.आई.ई.आर. जर्नल ऑफ ऐजुशनल स्टडीज, ट्रेण्डस एण्ड प्रैक्टिस, वॉल्यू.-5 सं. 2, पृ. 245-242.

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.841156

10. कौर, एस. (2015), *एटीट्यूड ऑफ बी.एड. स्टूडेंटस टुवर्डस क्रिऐटिव टीचिंग इन रिलेशन टू सर्टेन बैकग्रॉउण्ड फैक्टर्स*, इण्डियन जर्नल ऑफ एप्लाईड रिसर्च, वॉल्यू. 5, सं. 7, जूलाई 2015, पृ. 227-229.
11. मिश्रा, लोकनाथ (2007), रिफ्लैक्शन ऑफ प्यूपिल टीचर्स ऑफ टू ईयर्स बी.एड. कोर्स टुवर्डस टीचिंग टीचर्स एजुकेशन, वॉल्यू. (6), सं. 05
12. नागपाल, बी.एम. व बावा, एम.एस. (2011), *डेवेलपिंग टीचिंग कम्पीटेंसीज*, नई दिल्लीः बीवा बुक्स, पुस्तक समीक्षा, एन.सी.ई.आर.टी., भा.आ.शि., अप्रैल 2011, पृ. 106–108.
13. राजपूत, जे. (2012), *अध्यापकों के सामने उभरती चुनौतियाँ*, नई दिल्लीः भा.आ.शि., एन.सी.ई.आर.टी., वर्ष 32, अंक 3, जनवरी 2011, पृ. 111–113.
14. राणा, पी.एस. (2013), ए स्टडी ऑफ टीचिंग कम्पीटेंसी इन प्री. एण्ड पोस्ट ट्रेनिंग ऑफ बी.एड ट्रेनीज इन रिलेशन टू देयर रैंक डिफरेंस इन एंन्ट्रेंस टेस्ट, एजूकेसनीया कॉनफेस, वॉल्यू. (2), सं. 2 फरवरी 2013, पृ. 46–53.
15. शाह, सुजाता (2015), *मिश्रित अधिगम–आपेक्षित आधुनिक अध्यापन शैली व शिक्षण की रचनात्मक विधियाँ*, नई दिल्लीः एन.सी.ई.आर.टी., भा.आ.शि., जुलाई 2015, पृ. 28–31
16. सिंह, अरूण कुमार (2014), *मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में सांख्यिकी*, पटनाः नोवल्टी एण्ड कम्पनी, पृ. 124–149.
17. श्रीवास्तव, डी.एन. (2005), *सांख्यिकी एवं मापन*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगराः पृ. 212–240.
18. शुक्ला, एस. (2014), *टीचिंग कॅम्पीटेन्सी, प्रोफेशनल कमीटमेंट एण्ड जॉब सेटिस्फैक्शन -ए स्टडी ऑफ प्राईमरी स्कूल टीचर्स*, जर्नल्स ऑफ रिसर्च एण्ड मैथडइन एजूकेशन, वॉल्यू.4 (3), पृ. 44-64, डाटा रिट्रिव, ऑन www.iosrjournals.org
19. वालिया, जे.एस. (2014), *अधिगमनकर्ता, अधिगम एवं संज्ञान*, जालंधरः अहम् पाल पब्लिशर्स, पृ. 49 (क)

*Corresponding author.
E-mail address: niwas078@ gmail.com/dranilnautiyal103@ gmail.com